'पृथ्वीराजविजयमहाकाव्यम्' के प्रणेता पर कुछ आवश्यक टिप्पणियाँ

प्रताप कुमार मिश्र©

pratapm1977@gmail.com

सार-संक्षेप

चौहान-वंशीय प्रख्यात क्षत्रिय-वीर पृथ्वीराज ने 1191 ई. में शहाबद्दीन मुहम्मद गोरी को परास्त किया और द्वितीय युद्ध के दौरान 1193 ई. में वे वीरगति को प्राप्त हुए। चन्दबरदाई ने गोरी पर उनकी विजय को काव्यमय इतिहास के रूप में प्रस्तुत करते हुए 'पृथ्वीराजरासो' की रचना की जिससे हिन्दी-साहित्य के एक युग की स्थापना हुई। संयोग से इसी काल में 1192 ई. के लगभग 'पृथ्वीराजरासो' के समानान्तर ही संस्कृत में एक विलक्षण महाकाव्य का भी निर्माण हुआ 'पृथ्वीराजविजयमहाकाव्यम्।' इसके रचनाकार को लेकर संस्कृत-साहित्य के इतिहास में भ्रम की स्थिति बनी हुई है। इतिहासविदों का एक दल इसे चण्ड-कवि द्वारा प्रणीत मानता है तो दूसरी ओर कुछ सन्दर्भों में इसे जयानक-जयरथ द्वारा प्रणीत माना गया है। प्रस्तुत लघु आलेख में इसके प्रणेता को लेकर संक्षिप्त ऐतिहासिक परिचर्चा प्रस्तुत है। आशा है सुधी पाठक इस विषय पर आगे सामग्री एकत्रित करेंगे व इन्हें प्रकाश में लाएंगे।

की-वर्ड्स - पृथ्वीराज चौहान, गोरी, शहाबुद्दीन मुहम्मद, पृथ्वीराजविजय-महाकाव्य, चण्ड-कवि, जयानक, जयरथ, संस्कृत-साहित्य.

संस्कृत-साहित्य के इतिहास में 'पृथ्वीराजविजय' नामा तीन महाकाव्य की चर्चा उपलब्ध होती है। इन तीन महाकाव्यों में भी दो महाकाव्य का विषय प्रख्यात क्षत्रिय-वीर पृथ्वीराज के पौरुष-गान से है जबकि तीसरे का वर्ण्य-विषय राजस्थान के राजवंश और कतिपय राजाओं का यशोगान है। इन सबका संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है -

1. कालक्रम की दृष्टि से प्रथम 'पृथ्वीराजविजय' नामा महाकाव्य के रचयिता हैं चण्ड-कवि। ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार 1191 ई0 में पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी पर विजय प्राप्त की थी। पृथ्वीराज के इसी विजय को चण्ड-कवि ने अपने महाकाव्य में प्रस्तुत किया है। ऐतिहासिक सन्दर्भों के समानान्तर तो यह महकाव्य महत्त्वपूर्ण है ही साहित्य-समीक्षकों ने इसके काव्य-सौन्दर्य की भी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। प्रख्यात इतिहासविद् और संस्कृत-साहित्य के स्मरणीय महाकावि जोनराज (द्वितीय राजतंरगिणी या राजतरंगिणी के द्वितीय संस्करण के लेखक) ने चण्ड-विरचित इसी 'पृथ्वीराजविजय' की टीका की है। दुर्भाग्य से यह महाकाव्य अधुनापर्यन्त पूर्ण रूप से उपलब्ध नहीं हो सका है और ना ही जोनराज की पूरी टीका ही। इस महाकाव्य के उपलब्ध आठ सर्गों को जोनराज की टीका के

© अखिल भारतीय मुस्लिम-संस्कृत संरक्षण एवं प्राच्य शोध संस्थान, वाराणसी.

साथ म0 म0 गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने अजमेर से प्रकाशित कराया था।[1] चन्द्रशेखर पाण्डेय तथा शान्तिकुमार नानूराम व्यास ने इसकी रचना 1200 ई0 में अनुमानित किया है।[2]

2. 1193 ई0 में शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी पर पृथ्वीराज चौहान की विजय-गाथा को वर्ण्य बनाने वाला संस्कृत के दूसरे 'पृथ्वीराजविजय' नामा महाकाव्य के लेखक हैं महाकवि जयानक, जिन्हें जयरथ के रूप में भी जाना जाता है। दुर्भाग्य से इस महाकाव्य के भी 12 सर्ग ही उपलब्ध हो सके हैं और इन 12 सर्गों में भी यह महाकाव्य पूर्ण नहीं होता। 'न्यू कैटॉलॉगस कैटॉलॉगोरम, भाग-7, पृ.199 के अनुसार पृथ्वीराजविजय-महाकाव्यम् की पाण्डुलिपियाँ अनुपलब्ध हैं (भाग-7 के प्रकाशन तक) किन्तु विविध इतिहास-लेखकों व सम्पाकों ने इसे कश्मीरी-कवि जयानक द्वारा रचित माना है। ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार इसकी रचना 1178 से 1193 ई0 के बीच हुई और इस महाकाव्य के अन्तःसाक्ष्यो का विश्लेषण करें तो प्रतीत होता है कि इस महाकाव्य का लेखक पृथ्वीराज के आश्रित कवि थे।[3] रुय्यक ने 'अलंकारसर्वस्व' में 50 वें पद्य के रूप में इस महाकाव्य का एक पद्य उद्धृत किया है।
3. तीसरा 'पृथ्वीराजविजय' नामा महाकाव्य अज्ञात-कर्तृक है और आज तक इसके लेखक की पहचान संस्कृत-साहित्य के इतिहास ने नहीं की है। 'एशियाटिक सोसायटी ऑव बेंगाल' में इसके 12 पत्र प्राप्त हुए थे जिनमें 156 पद्य समाहित थे, इन्हीं पद्यों के आधार पर विद्वानों ने इस महकाव्य की विषय-वस्तु या काव्य-समीक्षा आदि प्रस्तुत किए। एक प्रामाणिक साक्ष्य के अनुसार - 'इस काव्य के उपलब्ध पद्यों में सोढदेव (1007 ई0) से लेकर भीमसिंह (1537 ई0) तक के शासन-काल की झलक हमें प्राप्त होती है।[4]

इस प्रकार देखें तो 'पृथ्वीराजविजय-महाकाव्य' के तीन-तीन संस्करण संस्कृत-साहित्य के इतिहास में चर्चित हैं। इनमें चण्ड-कवि द्वारा प्रणीत 'पृथ्वीराजविजय' की बाबत इतिहास-ग्रन्थों में बहुत ही कम चर्चा उपलब्ध होती है और जैसा कि हम उपर दिखा आए हैं वाचस्पति गैरोला, चन्द्रशेखर पाण्डेय तथा शान्तिकुमार नानूराम व्यास आदि इतिहासकारों ने चण्ड-कवि द्वारा प्रणीत 'पृथ्वीराजविजय' की सत्ता स्वीकार की है और जोनराज द्वारा चण्ड-कवि प्रणीत महाकाव्य पर ही टीका किए जाने का उल्लेख किया है। यहाँ एक अन्य प्रतिष्ठित इतिहासकार के मत को भी उल्लिखित करना आवश्यक है। 'पृथ्वीराजविजय' के सन्दर्भ में कृष्णमाचारियर् ने स्पष्ट रूप से

---

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ-863.
2. संस्कृत-साहित्य की रूपरेखा, चन्द्रशेखर पाण्डेय, तथा शान्तिकुमार नानूराम व्यास, पृष्ठ-286.
3. New Catalogus Catalogorum (vol.-7), page-199.
4. संस्कृत-साहित्य को राजस्थान का योगदान, पृष्ठ-5.

सूचित किया है कि इसकी रचना 1190 ई0 तक हो चुकी थी और इसके रचयिता चण्डकवि हैं। उनके अनुसार जोनराज ने जिस पृथ्वीराजविजयमहाकाव्य पर टीका लिखी वह महाकाव्य चण्ड-कवि द्वारा रचित है। कृष्णमाचारियर् ने यह भी सूचना दी है कि एस0 के0 बेलवेलकर ने इसे सम्पादित किया है।[5]

दुर्भाग्य से चण्ड-कवि के विषय में संस्कृत-साहित्य का इतिहास मौन है और इतिहास-लेखकों ने इनकी चर्चा तक नहीं की है। कृष्णमाचारियर् ने भी चण्ड-कवि के सन्दर्भ में कोई सूचना नहीं दी है।

चूंकि 'संगमनी' संगमनी, (संस्कृत-त्रैमासिकी, भाग-41, संख्या : 3-4) के अंकों में प्रकाशित हो रहे महाकाव्य के रचयिता को जयरथ और कोष्ठक में जयानक बताया गया है अतः यहाँ जयानक अथवा जयरथ के सन्दर्भ में भी कुछ चर्चा अपेक्षित है।

'न्यू कैटॉलॉगस कैटॉलॉगोरम्' भाग-7 ने यह सूचना दी है कि जयानक द्वारा प्रणीत 'पृथ्वीराजविजय' पर जोनराज ने टीका लिखी। 12 सर्गों में अपूर्ण प्राप्त 'पृथ्वीराजविजय' के रचनाकार के रूप में आचार्य बलदेव उपाध्याय ने भी जयानक नामा कवि की ही स्थापना की है जो चौहान-वंशीय प्रसिद्ध सम्राट् पृथ्वीराज का आश्रय ग्रहण करने के लिए कश्मीर से अजमेर आए और समादृत हो इस महाकाव्य की रचना की। उपाध्याय जी के अनुसार, चूंकि 1191 ई0 में मुहम्मद गोरी की पराजय तथा 1193 ई0 में पृथ्वीराज की मृत्यु हुई और यह महाकाव्य उनकी विजय को वर्ण्य-विषय बनाता है तो निश्चित रूप से इसकी रचना 1192 ई0 में हुई होगी।[6]

लेकिन इस महाकाव्य के रचयिता के नाम के सन्दर्भ में उपाध्याय जी का मत भी विवेचनीय है। यहाँ ध्यातव्य विन्दु है कि राजानक जयानक के पुत्र अलक ने रत्नाकर के 'हरविजयमहाकाव्य' पर टीका लिखी है जो कि 46 वें सर्ग तक ही लिखी जा सकी। साक्ष्यों के अनुसार अलक स्वयं रत्नाकर के शिष्य थे और रत्नाकर का काल विविध ऐतिहासिक तथा पुरातात्त्विक सन्दर्भों से 858-884 ई0 के लगभग प्रमाणित है। इस रूप में देखें तो यह जयानक 'पृथ्वीराजविजय' के लेखक तो कथमपि नहीं हो सकते। दूसरे किसी जयानक के विषय में स्वयं उपाध्याय जी ने ही चर्चा नहीं की है।[7]

अब बचे जयरथ के सन्दर्भ में संस्कृत-साहित्य का इतिहास इस प्रकार अपने विवरण प्रस्तुत करता है –

Stein ने अपने कश्मीर-सूची-पत्र में जयरथ को 'अलंकारविमर्शिनी' का लेखक बताया है और जयरथ तथा जयद्रथ को एक ही व्यक्ति बताया है। Aufrecht (CC, vol.-1, pages : 200,

5. History of Classical Sanskrit Literature, M. Krishnamachariyar, page-270.
6. संस्कृत-साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ-303.
7. अलक एंव जयानक पर विस्तृत विवरण हेतु देखिए - M. Krishnamachariyar, page-161.

201, 754, vol.-2 pages : 157, 754) ने जयरथ तथा जयद्रथ को परस्पर भाई बतया है और जयद्रथ को 'अलंकारविमर्शिनी' 'अलंकारोद्धरण' तथा 'हरचरितचिन्तामणि' आदि का लेखक बता जयरथ को 'तन्त्रालोकविवेक' का लेखक सूचित किया है। एम कृष्णमाचारियर् के अनुसार जयद्रथ और जयरथ एक ही व्यक्ति थे[8] जिसकी प्रसिद्ध रचना 'हरचरितचिन्तामणि' नामा 32 सर्गों का एक महाकाव्य है जो शिव के विविध अवतारों पर केन्द्रित रचना है।

राजानक जयरथ या जयद्रथ के पिता का नाम शृंगाररथ, और भाई का नाम जयरत्न था। जयरथ सुभट-भट्ट एवं शंखधर के शिष्य थे। कृष्णमाचारियर् के अनुसार चूंकि जयरथ या जयद्रथ ने 1191 ई0 में रचित 'पृथ्वीराजविजयमहाकाव्य' से उद्धरण लिए हैं अतः यह जयरथ अथवा जयद्रथ 13 वीं शती के पूर्वार्द्ध में वर्तमान थे। 13 वीं शती में जयरथ के वर्तमान होने के सन्दर्भ की पुष्टि में उन्होंने Jacobi का मत प्रस्तुत किया है।

उपाध्याय जी ने जयद्रथ तथा जयरथ के रूप में दो व्यक्तियों की पहचान की है। जयद्रथ को 'हरचरितचिन्तामणि' का लेखक माना है और इन्हें 'अलंकारविमर्शिणी' के लेखक प्रसिद्ध आलंकारिक जयरथ का भाई बताया है। इन दोनों भाईयों के संरक्षक कश्मीर के शासक राजराज या राजदेव का समय 1203 ई0 से 1226 ई0 होने से यही काल इनका भी ठहरता है।[9] यद्यपि काल-साम्य होने से इन जयरथ को हम पृथ्वीराजविजय का लेखक मान लें, किन्तु संस्कृत-साहित्य के किसी इतिहास लेखक या विचारक ने इस प्रकार की कोई सूचना नहीं दी है कि जयरथ, जिनका उपनाम जयानक था, या जिन्हें जयानक के नाम से भी जाना जाता था, -ने पृथ्वीराजविजय की रचना की।

इस प्रकार देखें तो 'पृथ्वीराजविजयमहाकाव्यम्' के प्रणेता पर संस्कृत-साहित्य की प्रत्यक्ष इतिहास-धारा को एक बार फिर से पुनर्विचार तथा अनुशीलन करना होगा। शोध में रुचि रखने वाले विद्वज्जन तथा अनुसन्धित्सु विद्यार्थी-गण इसके लिए सादर आमन्त्रित हैं।

8. History of Classical Sanskrit Literature, M. Krishnamachariar, pages: 269, 765-766.
9. संस्कृत-साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ-275-276.

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची -

1- Krishnamachariyar, M., 2001 A.D., History of Classical Sanskrit Literature, Motilal Banarasi Dass, Varanasi.

2- Raja, Dr. K. Kunjunni, 1973 A.D., New Catalogus Catalogorum (vol.-7), University of Madras, Madras.

१. उपाध्याय, आचार्य बलदेव, 2001 ई0, संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा निकेतन, वाराणसी.

२. गैरोला, डॉ. वाचस्पति, 1960 ई0, संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी.

३. त्रिपाठी, डॉ. शिवशंकर, **'पृथ्वीराजविजय-महाकाव्यम्', संगमनी, व**र्ष-41, अंक : 1-4, 2012 ई., भारतीय-मनीषा-सूत्रम्, संस्कृत-साहित्य परिषद्, प्रयाग, इलाहाबाद.

४. पाण्डेय, चन्द्रशेखर, तथा व्यास, नानूराम शान्तिकुमार, 1988 ई0, संस्कृत-साहित्य की रूपरेखा, साहित्य-निकेतन, कानपुर.

५. शर्मा, डॉ. रामदत्त, 1993 ई0, संस्कृत-साहित्य को राजस्थान का योगदान, ऋतु प्रकाशन, भिवानी.